स्पंदन

[ISBN-978-81-947610-2-0]

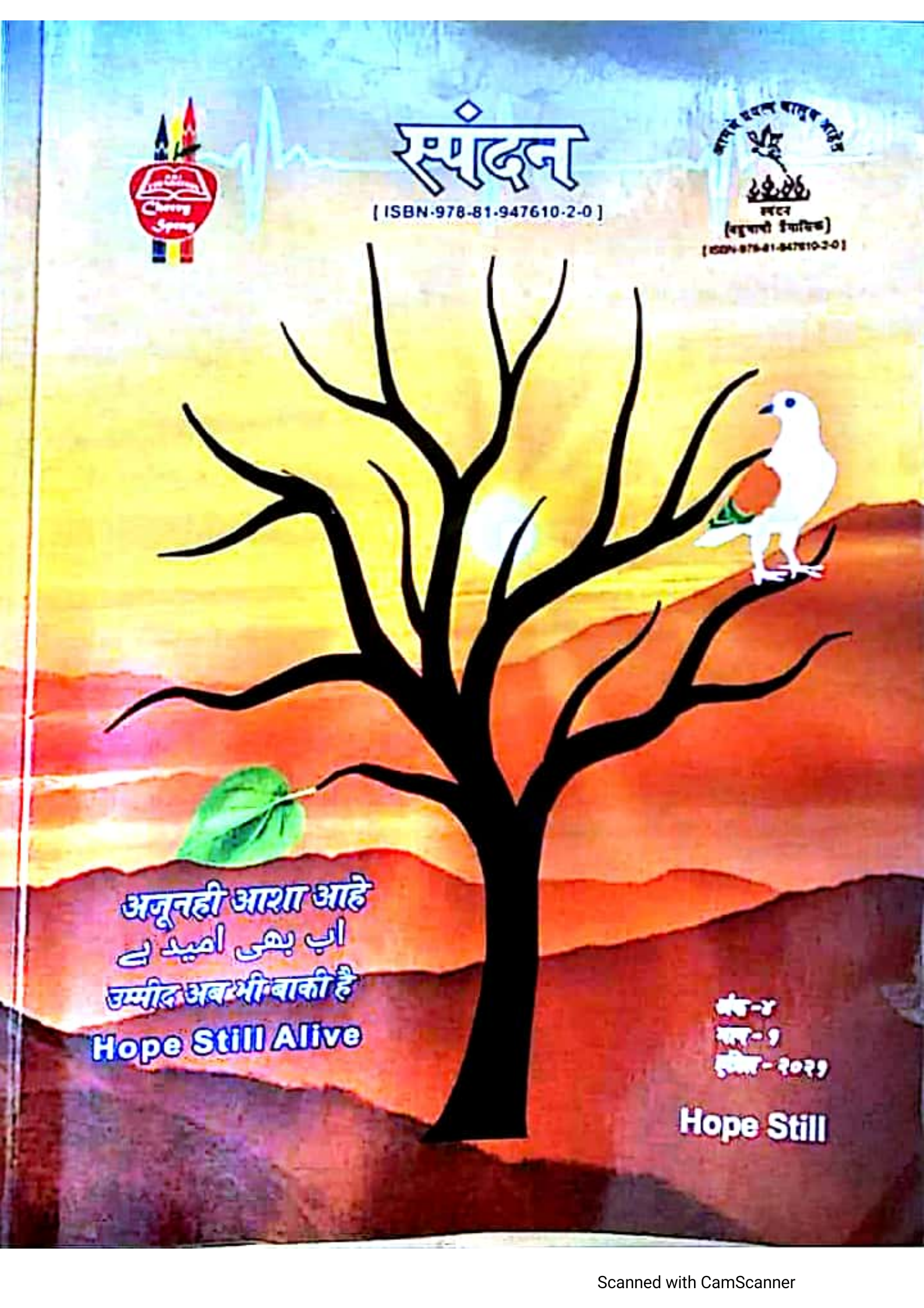

Scanned with CamScanner

आमचे प्रयत्न वाङ्मय आहेत

स्पंदन

बहुभाषी त्रैमासिका

[ISBN-978-81-947610-2-0]

Scanned with CamScanner

स्पंदन
(बहुभाषी त्रैमासिक)
अंक ४/भाग १/मे २०२१

सूरज हूँ ज़िंदगी की रमक छोड़ जाऊँगा
मैं डूब भी गया तो शफ़क छोड़ जाऊँगा

तारीख़-ए-कर्बला-ए-सुख़न देखना कि मैं
ख़ून-ए-जिगर से लिख के वरक़ छोड़ जाऊँगा

स्पंदन
(बहुभाषी त्रैमासिक)
अंक ४/भाग १/मे २०२१

मरहूम कारी नज़ीर अहमद पाशा
हाफिज माहीरे कुरान

मरहूम डॉ.सैय्यद आसिफ
नामवंत लेखक व समीक्षक
काव्यसंग्रह प्रकाशित

अर्पणपत्रिका

मरहूम डॉ.अक्रम पठान
नामवंत लेखक व समीक्षक

मरहूम लतीफ मगदूम
नामवंत समाज सेवक व साहित्य रसिक

इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैही राजऊन
(आम्ही सर्व जन अल्लाह चे आहोत आम्हाला त्याच्याच कडे परत जायचे आहे)

यांच्या सामाजिक,साहित्यिक क्षेत्रातील कामाची यांच्या कार्याची महती वाचकां पर्यंत
पोहोचवायी म्हणून या मान्यवराना स्पंदन संपादकीय मंडळाने हा अंक
समर्पित केला आहे.
अल्लाहसुब्हान हू तआला यांना जन्नत मध्ये जागादावा हीच अल्लाह शी प्रार्थना —आमीन

[ISBN-978-81-947610-2-0]

Scanned with CamScanner

बाबुराव पाईकराव	नातं प्रेमाचं काव्य उपक्रम	७९
रविंद्र जोगिपेठकर	मरहूम पंडित गुलाम दस्तगीर बिराजदार एक संस्मरणीय व्यक्तिमत्व	८०
चंद्रकांत हरिभाऊ खांबे	नातं प्रेमाचं काव्य उपक्रम	८२
कोमल सर्जेराव पिंगळे	नातं प्रेमाचं काव्य उपक्रम	८२
डॉ.विनोदकुमार विलासराव वायचळ	मरहूम आसिफ सय्यद जी एक संस्मरणीय व्यक्तिमत्व	८३
दिपाली वसंत जाधव	ओढ सरींची... (कविता)	८७
योगिन गुर्जर	अद्भुत भारत खंडाळ्याचा घाट!	८८
अरविंद गाडेकर	व्यंगचित्रे	८८
ॲड जयश्री बोडेकर	नातं प्रेमाचं काव्य उपक्रम	९०
प्रतिभा विभूते	नातं प्रेमाचं काव्य उपक्रम	९०
रा.र.वाघ	नातं प्रेमाचं काव्य उपक्रम (आद्याक्षरी कविता)	९१
विलास ठोसर	नातं प्रेमाचं काव्य उपक्रम	९१
स्टिफन कमलाकर खावडीया	नातं प्रेमाचं काव्य उपक्रम	९२
शेख.वाय.के.	नातं प्रेमाचं काव्य उपक्रम (अष्टाक्षरी)	९३
मलेका शेख सैय्यद	ऋणानुबंध मला नेतांना	९४
हुसेन साब पाशापुरे	जकात इस्लाम का एक अहम रुक्न	९५

Scanned with CamScanner

मरहूम आसिफ सय्यद जी
एक संस्मरणीय व्यक्तित्व

डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ
उस्मानाबाद
९२७०० ००७२१

अल्पपरीचय:•• सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग,योग शिक्षक,राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रमाधिकारी,संपादक'विवेक वचार विमर्श' १००से अधिक शोधालेख

" आ जाओ ..के तुम आओ तो शायद शेर मुकम्मिल हो।
ज़हन में कब से तनहा मिसरा अपना साथी ढूंढ रहा है।। "

हिन्दी इस भाषा विषय का छात्र और अध्यापक होने के नाते हमें संस्कृत, हिंदी, दखिनी, रेखा, उर्दु और हिन्दुस्तानी आदि भाषा रूपों का अध्ययन–अध्यापन करने का बहुत बड़ा अवसर मिला है।वैसे भाषा कोई भी हो, वह सकारात्मक, विधायक या रचनात्मक कार्य ही करती है। कोई भी भाषा नकारात्मक या विध्वंसात्मक कार्य नहीं करती है। इस बारे में मरहूम शायर और शायरी सीखानेवाले आसिफ सय्यद जी एक आदर्श और प्रेरणादायी व्यक्तित्व है। आसिफ साहब से मेरी पहली मुलाकात एक संस्मरणीय मुलाकात रही। सोलापुर विश्वविद्यालय में कार्यरत मेरे एक मित्र डॉ. भगवान आदटराव जी ने मुझे और मेरे सहकारी डॉ. संजय जोशी जी को सोलापुर विश्वविद्यालय में आयोजित होनेवाली एक कार्यशाला के बारे में बताया। वह कार्यशाला गज़ल लेखन और गायन की कार्यशाला थी। जिसमें उर्दू, हिंदी और मराठी गज़ल लेखन और गायन का प्रशिक्षण दिया जानेवाला था। डॉ. भगवान आदटराव स्वयं एक अच्छे गज़ल गायक होने के कारण वे इस कार्यशाला में अधिक से अधिक प्रशिक्षु सहभागी हो, इसी उद्देश्य से इस कार्यशाला का प्रचार कर रहे थे। हमने तय किया कि इस कार्यशाला में सहभाग लिया जाये।

दि. १३ जनवरी २०१९ के दिन हम अपने बी. ए. तृ. वर्ग के छात्र श्री. अकबर सय्यद के साथ इस कार्यशाला में शामिल हो गये। खदिमाने उर्दू फोरम, सोलापुर के अध्यक्ष श्री. विकार अहमद शेख जी और डॉ. भगवान आदटराव जी ने आसिफ सय्यद साहब से परिचय करवाया। आयु से वृद्ध किंतु उत्साह से युवा सय्यद साहब जी को देखते ही उनके बारे में अपार आदर निर्माण हुआ। इस एक दिवसीय कार्यशाला में सय्यद साहब ने उर्दू, हिंदी और मराठी में गज़ल लेखन के लिए जो अलग–अलग सत्रों में प्रशिक्षण दिया, वह युवा छात्रों को काफी प्रभावित किया। कुछ छात्रों ने तो वहीं पर कुछ बहरों पर दो–चार पंक्तियाँ भी लिखीं। सय्यद साहब का पढ़ाने का ढंग बहुत ही आकर्षक है। जो प्रशिक्षु उनकी दूसरी–तीसरी कार्यशाला में सहभागी होते है, वे निश्चित तौर पर अपनी

Scanned with CamScanner

प्रशिक्षु उनकी दूसरी–तीसरी कार्यशाला में सहभागी होते हैं, वे निश्चित तौर पर अपनी तुकबंदियों से अपने उस्ताद को एक प्रकार से 'गुरुदक्षिणा' भी अर्पित करते हैं। सय्यद साहब पढ़ाने में अक्सर इतने रममान हो जाते हैं कि उन्हें समय का ध्यानही नहीं रहता। यह एक समर्पित अध्यापक की अनिवार्य कसौटी होती है। बोर्ड पर हर बहर के लघु–गुरु शब्दों का लिखते हुए विश्लेषण करते जाते थे और हम मंत्रमुग्ध होकर सुनते रहे। भोजनोपरात के सत्र में उन्होंने कुछ प्रसिद्ध गज़लों को बहरों के उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत किया, जैसे अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की गज़ल 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।' और निदा फाजली की गज़ल 'कभी किसी को मुकम्मिल जहाँ नहीं मिलता।' या फिर शहरियार की गज़ल 'सीने में जलन आँखें में तूफ़ान सा क्यों है।'बीच में डॉ. इक़बाल की गज़ल 'तराना–ए–हिन्द' का विश्लेषण करते समय तो लगभग एक समाँ ही बाँध दिया। इसके बाद सुप्रसिद्ध गज़ल गायक भीमराव पांचाळे जी ने कुछ गज़लें पेश कीं।

कार्यशाला के उपरांत हमने सय्यद साहब का मोबाईल नंबर डॉ. भगवान आदटराव जी से लिया। दूसरे दिन उनसे बात कर उनसे उनका पुणे का पता ले लिया और पुणे आकर उनसे मिलने का वादा भी किया। संयोग से हमारे पुणे के मित्र डॉ. मोहम्मद शाकीर शेख जी, जो अंजुमन खैरूल इस्लाम संचलित पूना कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइन्स एवं कॉमर्स, कैम्प, पुणे में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रूप में कार्यरत हैं, उनका फोन आया कि वे एक अन्तर्राष्ट्रीय चर्चासत्र का आयोजन कर रहे हैं। यह चर्चासत्र दि. १९ जनवरी २०१९ के दिन आयोजित किया जा रहा था। पूना कॉलेज के चर्चासत्र के बाद मैंने सय्यद साहब के घर जाने का निश्चय किया। वैसे पूना कैम्प से कोंढवा जाना वह भी पूछताछ करते–करते आसान नहीं था। पर मैंने सीधे सय्यद साहब को ही फोन कर पता पूछा और एक–डेढ़ घंटे में उनके घर पर पहुँच गया। उनके घर पहुँचते ही उन्होंने मेरा स्वागत किसी चिर–परिचित मेहमान की तरह ही किया। जाते ही मैंने उन्हें बताया कि मेरी उस्मानाबाद जानेवाली बस रात ११ बजे है, तो वे लंबी चर्चा करने के लिए तैयार हो गये।

साहित्यिक चर्चा करते–करते न उन्हें समय का पता चला और न ही मुझे! वैसे मैं युवावस्था में संस्कृत छन्दों में श्लोक रचा करता था और कुछ तुकबंदियाँ हिन्दी–मराठी में भी कर लेता था। पर मैं कवि नहीं बन पाया था। पर जैसे ही संस्कृत के छन्दों का उल्लेख हुआ तो सय्यद साहब ने उनकी लिखी गज़लों में उन्होंने किस प्रकार से संस्कृत छन्दशास्त्र का उपयोग किया है, इसका विस्तारपूर्वक विवेचन करने लगे। उनकी प्राथमिक शिक्षा पुणे जैसे विद्या के मैके में मराठी माध्यम से हुई थी। उनके प्राथमिक शिक्षकों में मराठी–संस्कृत भाषाओं पर प्रभुत्व रखनेवाले ब्राह्मण विद्वान रहे हैं। बचपन में संस्कृत के वार्णिक छंदों या अक्षरगण वृत्तों जैसे – वसंततिलका, मंदाक्रांता, मंदारमाला, भुजंगप्रयात, शिखरिणी, शार्दुलविक्रिडित का उन्होंने बहुत मन लगाकर अध्ययन किया था। उनके सातवीं कक्षा के सहपाठी श्री. गोगसे जी का वे बार–बार उल्लेख कर रहे थे। जिन्होंने उन्हें पहली बार

 [ISBN-978-81-947610-2-0]

Scanned with CamScanner

शार्दुलविक्रिडित का उन्होंने बहुत मन लगाकर अध्ययन किया था। उनके सातवीं कक्षा के महपाठी श्री. गोणसे जी का वे बार-बार उल्लेख कर रहे थे। जिन्होंने उन्हें पहली बार 'दिवाने गालिब' जैसी पुस्तक खरीदकर दी थी, जो उनके इस शायरी के शौक में सर्वाधिक संस्मरणीय घटना साबित हो गयी। आपकी बातों से यह स्पष्ट होते जा रहा था कि आप एक प्रशिक्षण होने के साथ-साथ अच्छे अभिनेता, निर्देशक, लेखक, नाटककार, शायर, अनुवादक न जाने कितने बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी हैं।

अनुवाद के क्षेत्र में आपने बहुत बड़ा काम किया है। आपने मराठी कु सुप्रसिद्ध नाटककार श्री. राम गणेश गड़करी जी के नाटक 'एकच प्याला' का उर्दु अनुवाद 'आख़री प्याला' शीर्षक से किया है। डॉ. माधवी वैद्य जी के कविता संग्रह 'धुक्यात हरवलेली पैंजण' का उर्दु अनुवाद 'पलाश-गुल' शीर्षक किया था।

सय्यद साहब स्वयं एक अच्छे शायर हैं उन्होंने मुझे उनका उर्दु कविता संग्रह 'सफ़र है शर्त' भेंट किया सय्यद साहबउच्च कोटी के शायर हैं। उनकी नज़मों में मकागत्मक दृष्टिकोण दिखाई देता है। जो भारत जैसे बड़े देश में कौमी यकज़हिदी का आख्यान करते हैं। जैसे –

''पंच तत्वों का मिलन है कायनात
षट विकारों का मुरक्का आदमी
नौ रसों का मोजज़ा शेरो-हयात ताज हो या सोमनाथ.....! ''

सय्यद साहब अपनी अगली पीढ़ी को समझाते हुए कहते है –

'' मेरे बच्चों
मेरे नक्शे-कदम पर मत चलो
के मैं जहाँ हूँ....
वहाँ से खुद पलटना चाहता हूँ...।''

सय्यद साहब अपने बारे में कोई बड़ी बात नहीं करते, अपितु वे स्वयं को एक साधारण मनुष्य मानते हैं। उन्हें अपने बारे में कोई ग़लतफ़हमी नहीं है। ईश्वर की कृपा की आशा ही उनके मन में है –

''इक आस है दिल में तो फ़कत तेरे करम की।
वरना मेरी अवक़ात क्या इस कारे-जहाँ में।।''

पर उनका सबसे बड़ा अवदान उनकी दो पुस्तकें हैं, जो मराठी-हिंदी-उर्दु शायरी के नौसिखियों को शायरी के गुर सीखाती हैं – 'मराठी गज़लशास्त्र' और 'उर्दू काव्य-शास्त्र'। मेरे विचार में गजल लेखन का प्रशिक्षण देनेवाली सैकड़ों पुस्तके हो सकती हैं। पर ये दो पुस्तकें सचमुच बहुत ही उपयोगी और जन साधारण के आसान है।

सय्यद साहब ने उक्त दोनों पुस्तकें मुझे दीं। मैंने उनका शुक्रिया माना और उनके साथ एक तस्वीर याद के रूप में ली और वापिस अपने उस्मानाबाद आ गया। पर यह सिलसिला इतने पर ही नहीं रूका। कुछ दिनों के बाद उन्हीं का फोन आया। उन्हें कम्प्युटर

 [ISBN-978-81-947610-2-0]

Scanned with CamScanner

साथ एक तस्वीर याद के रूप में ली और वापिस अपने उस्मानाबाद आ गया। पर यह सिलसिला इतने पर ही नहीं रूका। कुछ दिनों के बाद उन्हीं का फोन आया। उन्हें कम्प्यूटर पर टायपिंग करना मुश्किल हो रहा था। उन्होंने मुझसे पूछा कि कोई मराठी टायपिंग करनेवाला आपके उस्मानाबाद में है क्या मैंने तुरंत उन्हें अपने एक मित्र श्री. नेताजी जावीर का फोन नंबर साझा किया। तब से अक्सर उनकी मराठी टायपिंग का काम नेताजी जावीर ही किया करते थे। परसों ही जावीर ने ही मुझे सय्यद साहब के निधन का दुःख समाचार सुनाया और कहा कि पचहत्तर वर्ष की दीर्घायु में कर्करोग के कारण आपने इस नश्वर देह को त्याग दिया इतिखाब साहब आपसे बात करना चाहते है। इतिखाब साहब से बात करने पर पता चला कि वे सय्यद साहब पर एक श्रद्धांजलि परक लेख संग्रह प्रकाशित करना चाहते है। इस समाचार से बहुत दुःख हुआ। ईश्वर आपकी दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करें। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।। अन्त में एक शायर का ही सहारा लेते हुए कहना चाहूंगा —

आ जाओ..के तुम आओ तो शायद शेर मुकम्मिल१ हो
ज़हनर में कब से तनहा२ मिसरा४ अपना साथी ढूँढ रहा है

सय्यद आसिफ़

Scanned with CamScanner

भावपूर्ण श्रद्धांजली

सुंदरलाल बहुगुणा यांच्या पर्यावरणवादी महान कामाला सलाम

स्पंदन (बहुभाषी त्रैमासिका) संपादकीय मंडळाची त्यांना भावपूर्ण श्रद्धांजली

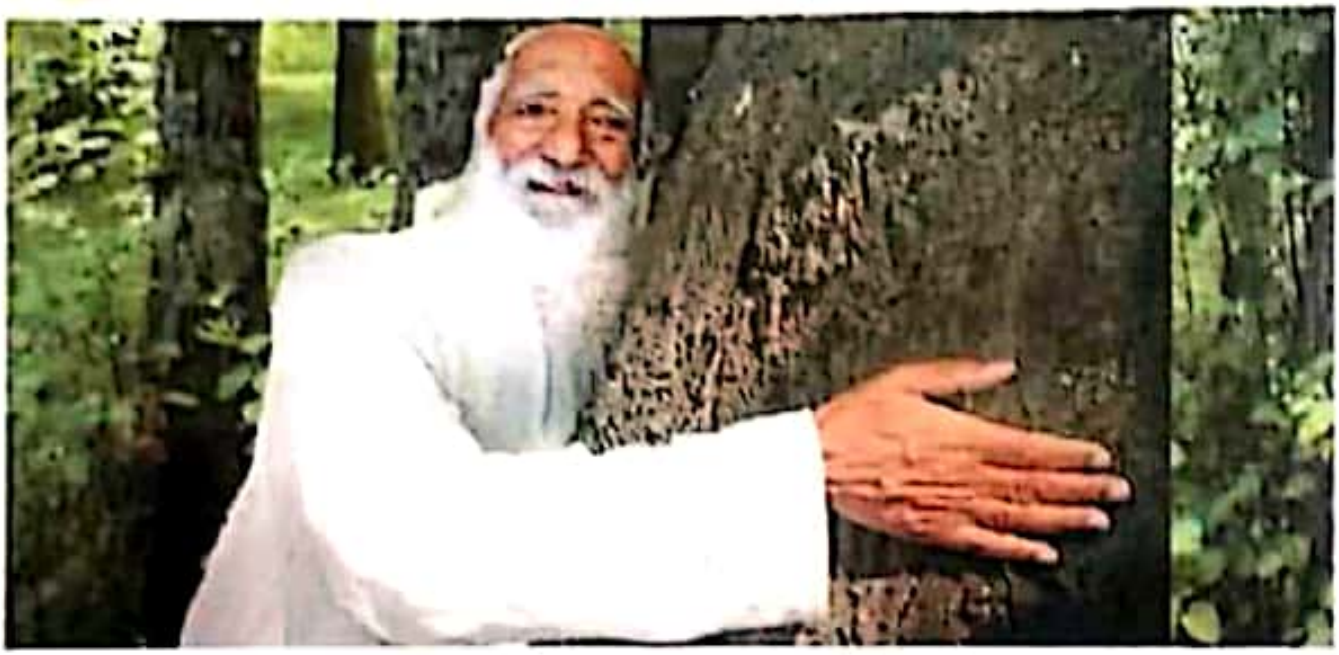

संकल्पना:— योगिन गुर्जर (सोलापुर)
ग्राफिक:— इंतेखाब फराश (पुणे)

Scanned with CamScanner